हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 17 ● अंक : 95 ● मुंबई, शुक्रवार, 28 नवम्बर 2025 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

खबर संक्षेप

नौ बार के विधायक सेंगोट्टैयन ने छोड़ा एआईएडीएमके, विजय की टीवीके को मिला अनुभवी चेहरा

चेन्नई की राजनीतिक हवा गुरुवार को अचानक बदलती दिखाई दी जब तमिलनाडु के वरिष्ठतम नेताओं में से एक, नौ बार के विधायक और पंचायत स्तर से लेकर विधानसभा तक जनता में गहरी पैठ रखने वाले के.ए. सेंगोट्टैयन ने एआईएडीएमके को अलविदा कहकर तमिल सुपरस्टार विजय की नई राजनीतिक पार्टी तमिलागा वेट्टी कझगम में शामिल होने का फैसला कर लिया। यह घटना महज पार्टी बदलने भर की नहीं थी, बल्कि तमिलनाडु की राजनीति के मौजूदा समीकरणों में एक बड़ा भूचाल मचा देने वाली थी, क्योंकि सेंगोट्टैयन केवल एक नेता नहीं, बल्कि उन चुनिंदा नामों में से हैं जिनके राजनीतिक सफर ने पिछले पाँच दशकों में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं और जिनकी पकड़ आज भी इरोड और आसपास के जिलों में बेहद मजबूत मानी जाती है। एआईएडीएमके से निष्कासन के एक दिन बाद ही विधानसभा से इस्तीफा देकर उन्होंने संकेत दे दिया था कि अब उनके राजनीतिक जीवन का नया अध्याय शुरू होने वाला है, और जब गुरुवार को वे टीवीके कार्यालय पहुंचे तो वहाँ उनका स्वागत किसी पुराने योद्धा की तरह किया गया। विजय खुद गुलदस्ता और सदस्यता कार्ड लेकर आगे आए और बड़ी गर्मजोशी से उनका हाथ पकड़कर उन्हें पार्टी में शामिल कराया। उनके साथ एआईएडीएमके की पूर्व सांसद सत्यभामा भी मौजूद थीं, जिन्हें विजय ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया, और इस दृश्य ने यह स्पष्ट कर दिया कि टीवीके अब सिर्फ एक नवोदित संगठन नहीं, बल्कि तमिलनाडु की बड़ी क्षेत्रीय शक्ति बनने की दिशा में गंभीर प्रयास कर रही है। विजय ने एक वीडियो संदेश जारी करते हुए सेंगोट्टैयन के राजनीतिक सफर को अद्वितीय बताया और कहा कि पिछले पचास वर्षों में जनता के बीच उनकी स्वीकार्यता और विश्वास टीवीके को ऐसी ताकत देगा जिसकी जरूरत किसी भी उभरती हुई पार्टी को होती है। उन्होंने पुरानी यादों को ताज़ा करते हुए कहा कि कभी एम.जी.आर. ने मात्र बीस वर्ष की आयु में सेंगोट्टैयन को राजनीति में जगह दी थी, और आज तमिल राजनीति का एक नया अध्याय उसी विश्वास की विरासत को आगे बढ़ा रहा है।

फिरोजपुर हत्याकांड में बड़ा मोड़: मुठभेड़ में मुख्य आरोपी मारा गया, गोलीबारी में कांस्टेबल घायल

पंजाब के फिरोजपुर में आरएसएस कार्यकर्ता नवीन अरोड़ा की हत्या के मामले में मंगलवार देर रात घटनाक्रम ने अचानक वह मोड़ लिया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। पुलिस की गिरफ्त में मौजूद मुख्य आरोपी बादल को जब जांच टीम हथियारों की बरामदगी के लिए शमशान घाट के पास ले जा रही थी, तभी अंधेरे और सन्नाटे से घिरी उस जगह पर अचानक गोलियों की गूंज उठी। यह हमला कहीं बाहर से नहीं, बल्कि उसी गिरोह के सदस्यों की ओर से किया गया था, जिनके साथ मिलकर बादल ने हत्या की साजिश रची थी। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, फायरिंग इतनी तीव्र और अचानक थी कि टीम को तत्काल मोर्चा संभालना पड़ा। डीआईजी एचएस गिल के मुताबिक, दोपहर तक इस मामले में कनव और बादल को गिरफ्तार किया जा चुका था, और रिकवरी के लिए उन्हें मौके पर ले जाया जा रहा था। लेकिन जैसे ही टीम शमशान घाट के पास पहुँची, घात लगाए बैठे उनके साथी ताबड़तोड़ गोलियाँ चलाने लगे। इस अप्रत्याशित हमले में पंजाब पुलिस के हेड कांस्टेबल बलौर सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। घटनास्थल पर अराजकता का माहौल था—धूल, धुआँ और लगातार गूंजती गोलियाँ। पुलिस और हमलावरों के बीच हुई इस मुठभेड़ के बीच ही एक ऐसा पल आया जिसने पूरी स्थिति को उलट दिया। आरोपी बादल, जिसे पुलिस हथकड़ी लगे हुए लिए खड़ी थी, अपने ही साथियों की चलाई गोली का निशाना बन गया। गोली उसके सीने के आर-पार चली गई और वह घटनास्थल पर ही ढेर होकर गिर पड़ा। पुलिस के अनुसार, यह उसी गिरोह का हमला था जिसने 15 नवंबर को आरएसएस कार्यकर्ता नवीन अरोड़ा की हत्या की थी। उनकी योजना संभवतः बादल को छुड़ाने या पुलिस टीम को नुकसान पहुँचाने की थी, परन्तु उनका ही साथी उसी हमले में मौत के घाट उतर गया। कांस्टेबल बलौर सिंह को तत्काल अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने बताया कि उनकी हालत फिलहाल स्थिर है, हालांकि खतरे से बाहर नहीं कहा जा सकता। जिला पुलिस ने इलाके की नाकेबंदी कर दी है और फरार हमलावरों की तलाश के लिए विशेष अभियान शुरू किया गया है। मुठभेड़ की खबर पूरे क्षेत्र में तेज़ी से फैल गई। फिरोजपुर से लेकर फाजिल्का तक लोग यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर अपराधियों का यह नेटवर्क कितना गहरा और संगठित है, जो न सिर्फ हत्या करता है बल्कि अपने गिरफ्तार साथियों को छुड़ाने के लिए पुलिस पर गोलियाँ चलाने से भी नहीं हिचकता।

महाराष्ट्र में महायुति में 'लंका' वाली लड़ाई, फडणवीस-शिंदे शीत युद्ध तेज, स्टिंग और पैसे वाले आरोपों से बढ़ा विवाद

पालघर/मुंबई। महाराष्ट्र के पालघर जिले में होने वाले डहाणू नगर परिषद चुनाव से पहले सत्ताधारी महायुति में तनाव चरम पर पहुंच गया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बीच चल रहा शीत युद्ध अब सार्वजनिक मंचों पर तीखे वार-पलटवार में बदल गया है। दोनों नेता एक ही गठबंधन में होने के बावजूद चुनावी रैलियों और मीडिया बयानबाजी में एक-दूसरे को घेरने में कोई कमी नहीं छोड़ रहे। पिछले हफ्ते दहानू में एकनाथ शिंदे ने भाजपा उम्मीदवार को अहंकारी, रावण जैसा बताते हुए कहा कि रावण भी अहंकारी था, इसलिए उसकी लंका जली। इस पर फडणवीस ने पलटवार किया और कहा कि हमारा उम्मीदवार भरत है और भरत राम का भाई, और लंका वैसे भी भरत ही जलाएगा। भले ही फडणवीस ने शिंदे का नाम सीधे नहीं लिया, राजनैतिक पंडित इसे फडणवीस बनाम शिंदे शीतयुद्ध का नया पड़ाव बता रहे हैं।

गुरुवार को इस विवाद में नया मोड़ आया। भाजपा कोटे से राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने शिंदे गुट के शिवसेना विधायक नीलेश राणे द्वारा भाजपा के एक कार्यकर्ता के घर स्टिंग ऑपरेशन करने पर आपत्ति जताई। बावनकुले ने कहा कि किसी के घर में घुसना और शयनकक्ष तक पहुंचकर स्टिंग करना उचित नहीं है। वहीं, नीलेश राणे का दावा है कि दो दिसंबर को होने वाले स्थानीय निकाय चुनाव से पहले सिंधुदुर्ग जिले के मालवण में भाजपा कार्यकर्ता के घर से मतदाताओं को बांटने के लिए रखे गए नकदी से भरे बैग मिले। उन्होंने कहा कि राज्य भाजपा प्रमुख रवींद्र चव्हाण ने दो दिन पहले मालवण का दौरा किया था। भाजपा नेता नितेश राणे, नीलेश राणे के बड़े भाई, ने इस आरोप का खंडन करते हुए कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं के पास अक्सर वैध व्यावसायिक आय होती है और किसी के घर पर नकदी होने को अन्यथा नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि किसी को भी सिर्फ भाजपा को बदनाम करने के लिए आरोप नहीं लगाने चाहिए।

भाजपा मंत्री बावनकुले ने कहा कि मामले की गहन जांच होनी चाहिए, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि बरामद पैसा व्यावसायिक गतिविधियों का हिस्सा था, संपत्ति के लेन-देन से संबंधित था या किसी अन्य कारण से। उन्होंने यह भी कहा कि किसी के घर में सीधे घुसना और शयनकक्ष में जाकर स्टिंग करना उचित नहीं है और इसे अनुचित ठहराया जा सकता है।

वहीं, विवाद का एक और राजनीतिक मोड़ हिंगोली से सामने आया। बीजेपी विधायक तानाजी मुटकुले ने दावा किया कि शिंदे गुट के शिवसेना विधायक संतोष बांगड़ ने 2022 में उद्धव ठाकरे गुट छोड़कर शिंदे खेमे में जाने के लिए 50 करोड़ रुपये लिए थे। मुटकुले ने कहा कि बांगड़ बिना पैसे किसी भी काम के लिए तैयार नहीं होते और उन्होंने रातों-रात अपनी भूमिका बदल दी। उन्होंने इसे स्पष्ट किया कि बांगड़ कभी उनके साथी नहीं हो सकते क्योंकि उनकी विचारधारा भाजपा के साथ मेल नहीं खाती। विश्लेषकों का कहना है कि महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन में चल रही यह तनातनी राज्य की राजनीति के लिए गंभीर संकेत देती है। चुनावी समय में इस तरह के आरोप-प्रत्यारोप न केवल गठबंधन के अंदर तनाव बढ़ाते हैं, बल्कि जनता और मतदाताओं के बीच भी अनिश्चितता पैदा कर सकते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि आगामी निकाय चुनाव और राज्य सरकार के कामकाज पर इस शीत युद्ध के असर लंबी अवधि तक देखने को मिल सकते हैं।

बदलापुर–कर्जत तीसरी–चौथी लाइन को कैबिनेट की मंज़ूरी, मुंबई उपनगरीय रेल तंत्र में नई रफ़्तार का रास्ता खुला

मुंबई। मुंबई महानगर क्षेत्र के लाखों यात्रियों के लिए राहत और विकास की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए केंद्र सरकार ने बदलापुर–कर्जत तीसरी और चौथी लाइन परियोजना को मंज़ूरी दे दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति की बैठक में यह प्रस्ताव 26 नवंबर को अनुमोदित किया गया। इस महत्वपूर्ण परियोजना की घोषणा होते ही मुंबई उपनगरीय रेल नेटवर्क के विस्तार, समयबद्धता और क्षमता वृद्धि को लेकर यात्रियों और रेलवे अधिकारियों में उत्साह का माहौल बन गया है। मध्य रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी डॉ. स्वप्निल नीला ने पुष्टि की कि यह प्रोजेक्ट 2,781 करोड़ रुपये मूल्य की दो बड़ी रेल परियोजनाओं में से एक है, जो मुंबई–चेन्नई हाई डेंसिटी नेटवर्क को मजबूत आधार देगी और देश के पश्चिमी तथा दक्षिणी हिस्सों के बीच कनेक्टिविटी को और सुचारू बनाएगी।

करीब 32 किलोमीटर लंबी बदलापुर–कर्जत तीसरी–चौथी लाइन परियोजना को मुंबई के व्यस्त कल्याण–कर्जत मार्ग पर ट्रैफिक दबाव कम करने और उपनगरीय ट्रेनों के निर्बाध संचालन के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इस रूट पर प्रतिदिन लाखों यात्री यात्रा करते हैं, जिसके कारण ट्रैक की क्षमता लगभग सीमा पर पहुंच चुकी है। प्रस्तावित नई लाइन में 8 बड़े पुल, 106 छोटे पुल, एक रोड अंडरब्रिज और 6 स्टेशन शामिल होंगे। परियोजना की कुल लागत 1,324 करोड़ रुपये तय की गई है, जिसे रेलवे और महाराष्ट्र सरकार समान रूप से साझा करेंगे। इसके पूरा होने पर यह लाइन न केवल उपनगरीय रेल सेवाओं को राहत देगी, बल्कि मालगाड़ी संचालन को भी अधिक सक्षम और प्रभावी बनाएगी।

डॉ. नीला ने बताया कि इस परियोजना से मुंबई उपनगरीय रेल तंत्र की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और प्रतिदिन लगभग 15 लाख यात्रियों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। अत्यधिक भीड़ और धीमी गति से जूझने वाली ट्रेनों के लिए यह परियोजना एक वरदान साबित होगी। नई लाइन बनने के बाद लोकल ट्रेनों की समयबद्धता में सुधार आएगा और संचालन में तेजी और लचीलापन बढ़ेगा। पनवेल के बाद अब कर्जत क्षेत्र भी मुंबई महानगर क्षेत्र के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ता दिखाई देगा। बड़े शैक्षणिक, आवासीय और व्यावसायिक केंद्रों के कर्जत और उसके आसपास विकसित होने की संभावना और तेज हो जाएगी।

रेलवे ने कल्याण–बदलापुर सेक्शन में काम तेज कर दिया है और पनवेल–कर्जत सेक्शन के मार्च 2026 तक पूरा होने की संभावना जताई है। इसी अवधि तक कई नई लोकल ट्रेनों को चलाने की तैयारी भी रेलवे कर चुका है। भीड़ कम करने के लिए 15 डिब्बों की क्षमता वाले विस्तृत प्लेटफॉर्मों का निर्माण और विस्तार पूरे उपनगरीय तंत्र में चल रहा है। 34 स्टेशनों में से 27 पर कार्य दिसंबर तक पूरा होने की संभावना है, जबकि शेष कार्य मार्च 2026 तक समाप्त कर दिया जाएगा। सीएसटी और ठाणे जैसे प्रमुख स्टेशनों पर भी काम तेज़ गति से चल रहा है ताकि नई लोकल ट्रेनों का सुचारू संचालन समय पर शुरू किया जा सके।

परियोजना से न केवल यात्री सुविधा बढ़ेगी बल्कि पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अनुमान है कि इस लाइन के माध्यम से हर साल 7.2 मिलियन टन अतिरिक्त माल परिवहन संभव होगा। इससे करीब 41 लाख लीटर डीज़ल की बचत होगी और लगभग 46.2 करोड़ रुपये की लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी। पर्यावरणीय दृष्टि से यह परियोजना 2 करोड़ किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कम करने में मदद करेगी, जो लगभग 8 लाख पेड़ लगाने के बराबर प्रभाव उत्पन्न करती है। यह आंकड़े परियोजना की दीर्घकालिक उपयोगिता और महत्व को स्पष्ट करते हैं।

रेलवे में 'हलाल प्रमाणित भोजन' पर उठा विवाद शांत करने की कोशिश, रेल मंत्री बोले-ऐसा कोई नियम था ही नहीं

नई दिल्ली। देशभर में ट्रेनों में परोसे जाने वाले भोजन को लेकर अचानक छिड़ी बहस के बीच रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को साफ किया कि भारतीय रेलवे में हलाल प्रमाणित भोजन का कोई नियम, व्यवस्था या निर्देश कभी लागू ही नहीं किया गया था। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक पुराने वीडियो और उससे पैदा हुई राजनीतिक गर्माहट के बाद रेल मंत्रालय को इस मुद्दे पर आधिकारिक बयान देना पड़ा। रेल भवन में संवाददाताओं से बातचीत में वैष्णव ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि रेलवे केवल भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण यानी एफएसएसएआई के मानकों का पालन करता है और इसी के अनुरूप भोजन तैयार व परोसा जाता है। उन्होंने कहा कि रेल मंत्रालय ने किसी भी समय हलाल प्रमाणन से जुड़े किसी प्रोटोकॉल को न तो अपनाया और न ही इसके लिए कोई बाध्यता तय की गई। मंत्री ने यह भी जानकारी दी कि वीडियो में जिस चाय पैकेट पर हलाल लिखा होने की बात कही जा रही है, उस सामग्री की आपूर्ति प्रक्रिया और स्रोत की जांच की जाएगी ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि ऐसे उत्पाद रेलवे सिस्टम तक पहुंचे कैसे।

रेल मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया कि न भारतीय रेलवे और न ही आईआरसीटीसी के खानपान नियमों में हलाल प्रमाणन जैसी कोई व्यवस्था मौजूद है। रेलवे का एकमात्र मानक एफएसएसएआई है, जिसे भारत में खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता का आधार माना जाता है। अधिकारियों के अनुसार रेलवे में भोजन की खरीद, पैकिंग, आपूर्ति और वितरण की पूरी प्रक्रिया मानकीकृत है और इसमें धर्म आधारित किसी प्रमाणन को शामिल नहीं किया जाता। उन्होंने कहा कि रेलवे का उद्देश्य यात्रियों को सुरक्षित, स्वच्छ और गुणवत्ता-युक्त भोजन उपलब्ध कराना है, किसी धार्मिक व्यवस्था को बढ़ावा देना नहीं। इस मुद्दे ने उस समय और जोर पकड़ा जब विश्व हिंदू परिषद ने हलाल प्रमाणन को लेकर आपत्ति जताई और कहा कि किसी एक धर्म विशेष की खाद्य परंपरा को संस्थागत रूप से बढ़ावा देना संविधान की भावना के अनुरूप नहीं है। परिषद का कहना है कि ऐसी व्यवस्था से देश के पारंपरिक मांस और खाद्य व्यवसाय से जुड़े गैर-मुस्लिम समुदायों की आजीविका पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। विहिप की ओर से दर्ज शिकायतों में यह भी कहा गया कि हलाल प्रमाणन को अनिवार्य बनाने की प्रवृत्ति बाजार में असमान परिस्थितियां पैदा करती है, जिससे खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के अनेक पारंपरिक हिस्सेदारों पर आर्थिक दबाव बढ़ सकता है।

इसी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी हाल ही में शिकायतों के आधार पर रेलवे बोर्ड को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा था। आयोग ने रेलवे से यह जानने को कहा है कि यदि ऐसी कोई हलाल आधारित प्रमाणन प्रक्रिया लागू नहीं है तो संबंधित वीडियो में दिखाए गए उत्पाद रेलवे सिस्टम में कैसे आए। आयोग ने रेलवे बोर्ड से पूरे मामले की विस्तृत रिपोर्ट मांगते हुए यह भी कहा कि यात्री हित सर्वोपरि है और किसी भी प्रकार की भ्रम की स्थिति को दूर किया जाना आवश्यक है।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के बयान के बाद मंत्रालय में यह उम्मीद जताई जा रही है कि मामले से पैदा हुई गलतफहमियां दूर होंगी और स्थिति सामान्य होगी।

देशभर में मेडिकल मंजूरी घोटाले पर ED की बड़ी कार्रवाई, दस राज्यों में एक साथ छापे से मचा हड़कंप

नई दिल्ली। देश में मेडिकल शिक्षा व्यवस्था की पारदर्शिता पर लंबे समय से उठते सवालों के बीच गुरुवार का दिन अचानक तेज़ हलचल भरा साबित हुआ, जब प्रवर्तन निदेशालय ने मनी लॉन्ड्रिंग की जांच के तहत दस राज्यों में फैले पंद्रह ठिकानों पर एक साथ छापेमारी कर दी। यह कार्रवाई न केवल मेडिकल कॉलेजों को पाठ्यक्रम मंजूरी दिलाने में कथित रिश्वतखोरी के आरोपों पर केंद्रित है, बल्कि उस पूरे नेटवर्क को सामने लाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है, जो लंबे समय से परदे के पीछे चल रहे भ्रष्ट तंत्र को शक्ति देता रहा है। सुबह-सुबह दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, बिहार और उत्तर प्रदेश

में कई इलाकों में ईडी की टीमों के पहुंचते ही हलचल मच गई। स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक अधिकारियों, मेडिकल संस्थानों से जुड़े व्यक्तियों और दलालों में अचानक बेचैनी फैल गई, क्योंकि यह छापेमारी उस समय सामने आई है जब मेडिकल शिक्षा से जुड़े कोर्सों की मंजूरी का दौर विभिन्न राज्यों में जारी है। ईडी की टीमें बिना किसी शोर-शराबे के सीधे उन परिसरों में दाख़िल हुईं, जिन पर एजेंसी को आशंका थी कि यहाँ से अनियमित लेन-देन और मंजूरी दिलाने के लिए रिश्वत का खेल संचालित होता रहा है। मामले से जुड़े सूत्रों का कहना है कि यह जांच केवल किसी एक कॉलेज या एक अधिकारी तक सीमित नहीं है, बल्कि एक व्यापक तंत्र की तह तक पहुंचने का प्रयास है, जिसमें राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के कुछ सदस्य, मध्यस्थ, शिक्षा माफिया और सरकारी तंत्र के भीतर बैठे वे लोग शामिल हो सकते हैं, जो मंजूरी की प्रक्रिया को प्रभावित कर रहे थे। आरोपों के अनुसार, मेडिकल कॉलेजों को नई सीटें जोड़ने, नए कोर्स शुरू करने और मान्यता नवीनीकरण के लिए आवश्यक अनुमति देने में एक गुप्त रिश्वत चैन लंबे समय से सक्रिय था। ईडी अब इसी चैन के पैसों की आवाजाही, हवाला ट्रेल, बैंक खातों के संदिग्ध लेन-देन और डिजिटल डेटा के विश्लेषण पर ध्यान दे रही है।

एजेंसी की टीमों ने जिन ठिकानों पर छापेमारी की, वहाँ से इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, मोबाइल फोन, हार्ड डिस्क, पेन ड्राइव और वित्तीय रिकॉर्ड अपने कब्ज़े में लिए गए। तलाशी के दौरान एजेंसी उन दस्तावेजों और खातों को तलाशने में जुटी रही, जिनसे यह संकेत मिल सके कि रिश्वत की रकम किस तरह से इकट्ठी हुई, किसके हाथ तक पहुंची और किस मंजूरी के बदले कितनी सेटिंग की गई।

कर्नाटक कांग्रेस में नेतृत्व संघर्ष पर जल्द विराम, मल्लिकार्जुन खरगे बोले-सत्ता साझेदारी पर हाईकमान लेगा अंतिम फैसला

बेंगलुरु/दिल्ली। कर्नाटक में कांग्रेस की सत्ता के भीतर उठापटक और नेतृत्व बदलाव की अटकलों के बीच पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने संकेत दिया है कि मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री पदों की साझेदारी को लेकर जारी विवाद का समाधान अब दूर नहीं। गुरुवार को वे अचानक दिल्ली पहुंचे, जहां इंदिरा गांधी भवन में एक अहम बैठक बुलाई गई है। माना जा रहा है कि इस बैठक में कर्नाटक सरकार के भविष्य की दिशा तय करने वाले कुछ बड़े फैसले लिए जा सकते हैं, क्योंकि पार्टी की राज्य इकाई में पिछले कुछ सप्ताह से सत्ता हस्तांतरण का मुद्दा लगातार सुर्खियों में है।

बेंगलुरु से दिल्ली रवाना होने से पहले खरगे ने मीडिया से बातचीत में बेहद साफ और दृढ़ शब्दों में

कहा कि कांग्रेस में फैसले किसी एक नेता की इच्छा पर नहीं, बल्कि सामूहिक विचार-विमर्श और गहन चर्चा के बाद तय किए जाते हैं। उन्होंने कहा, "मैं दिल्ली में पार्टी के तीन से चार शीर्ष नेताओं से मुलाकात करूंगा। कर्नाटक में नेतृत्व से जुड़े सभी पहलुओं पर बातचीत होगी। आलाकमान हर मुद्दे पर उचित और संतुलित निर्णय लेगा। मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और सत्ता हस्तांतरण के समीकरणों पर भी जल्द स्पष्टता आ जाएगी।" उनकी यह टिप्पणी उन कयासों के बीच आई है, जिसमें कहा जा रहा था कि कर्नाटक सरकार में अहम पदों को लेकर बैक-डोर बातचीत चल रही है और सत्ता सौंपने का आधा–आधा फॉर्मूला दोबारा सक्रिय हो चुका है।

कर्नाटक में सिद्धारमैया सरकार बनने के बाद से ही कांग्रेस के भीतर एक अनकहा तनाव बना हुआ था। राज्य में विधानसभा चुनावों के बाद पार्टी की जीत अभूतपूर्व थी, पर नेतृत्व चयन को लेकर हाईकमान ने सिद्धारमैया को मुख्यमंत्री और डी.के. शिवकुमार को उपमुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी देते हुए एक संतुलन साधा था। तब से यह चर्चा समय–समय पर उठती रही कि क्या सत्ता हस्तांतरण का कोई मौखिक फॉर्मूला तय हुआ था, जिसके तहत सरकार के आधे कार्यकाल के बाद नेतृत्व बदला जा सकता है। पिछले दिनों यह विवाद तब और तीव्र हो गया जब कुछ नेताओं ने संकेत दिए कि राज्य के राजनीतिक समीकरण बदल रहे हैं और दोनों शीर्ष पदों पर पुनर्विचार किया जा सकता है।

इसी पृष्ठभूमि में अब दिल्ली में होने वाली यह उच्चस्तरीय बैठक बेहद अहम मानी जा रही है।

संपादकीय

महिला क्रिकेट को नई ऊंचाई देगी कामयाबी

रविवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वो इतिहास रचा, जिसका दो दशक से इंतजार था। एक दिवसीय क्रिकेट का वर्ल्ड कप जीतकर उन्होंने उस कमी को पूरा किया, जो साल 2005 और 2017 में फाइनल में पहुंचकर भी हासिल न हो सकी थी। ऐसे वक्त में जब भारतीय महिला क्रिकेट टीम को खिताबी दौड़ में कमजोर माना जा रहा था, उसने सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया टीम को सेमीफाइनल के एक रोमांचक मुकाबले में हरा दिया था। मुकाबले में मुंबई की जेमिमा रॉड्रिग्स ने 127 रन की तूफानी यादगार पारी खेली। लगता था शुरुआत में कई मैच हारने वाली भारतीय महिला टीम ने अपनी ऊर्जा फाइनल मुकाबले के लिये बचा रखी थी, जिसमें उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की टीम को 52 रन से हरा दिया। रविवार की रात हरमनप्रीत कौर की कप्तानी ने पासा ही पलट दिया। फिर उनकी टीम ने नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में चालीस हजार से ज्यादा दर्शकों के बीच जीत का जश्न जमकर मनाया। इस जुनूनी जश्न की वे हकदार भी थीं। साथ ही देश के एक अरब चालीस करोड़ लोगों को भी जीत के जश्न में डुबो दिया। लोग इस साल होने वाले कई दुखांत घटनाक्रमों को भुला इस जीत की लय में झूम उठे। यह सुखद आश्चर्य ही था कि टीम ने लगातार तीन हार झेलने के बाद टूर्नामेंट में दमदार वापसी की। सेमीफाइनल में लोग सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय टीम को कमतर आंक रहे थे। सुखद आश्चर्य देखिये कि फाइनल मुकाबले में हरियाणा की उस शैफाली वर्मा ने करिश्माई पारी खेली, जो विश्व कप के शुरू होने से पहले टीम का हिस्सा भी नहीं थी। उसने अपने चयन को तार्किक साबित किया। इसी तरह दीप्ति शर्मा ने भी शानदार खेल का परिचय दिया। निश्चय ही महिला क्रिकेट टीम की यह शानदार जीत देश की उन लाखों बेटियों के सपनों को नयी ऊंचाइयां देगी, जो अपना आसमान हासिल करना चाहती हैं।

निस्संदेह, विश्वकप में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की शानदार जीत के दूरगामी परिणाम होंगे। इस खेल में टीम दीर्घकालिक वर्चस्व कायम रख सकती है। दरअसल, अब तक महिला क्रिकेट को दोयम दर्जे का माना जाता रहा है। दरअसल, जब से महिला खिलाड़ियों को पुरुष खिलाड़ियों के समान वेतन मिलने लगा और उन्हें आईपीएल-शैली की टी-20 लीग में दमखम दिखाने का मौका मिला, टीम के प्रदर्शन में अभूतपूर्व सुधार आया। धीरे-धीरे वे पुरुष क्रिकेट के सितारों की तरह आभा बिखेरने लगी। हालांकि, आगे की राह इतनी भी आसान नहीं है, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। फिलहाल उनके पास इस कामयाबी का जश्न मनाने का मौका है। उल्लेखनीय है कि टीम में कई ऐसी खिलाड़ी हैं जिन्होंने तमाम आर्थिक-सामाजिक चुनौतियों का मुकाबला करके अपनी जगह बनायी। वे तपती पगडंडियों से गुजरने वाली बेटियों के लिये प्रेरणास्रोत हैं। इन खिलाड़ियों ने मैदान से पहले निजी जीवन में बड़ा संघर्ष किया। बेहद जटिल पृष्ठभूमि से आने के बावजूद वे विश्व विजेता टीम का हिस्सा बनी हैं। उनके साथ अभ्यास मैच खेलने के लिये लड़कियां नहीं होती थी, अतः वे शुरुआती क्रिकेट लड़कों की टीम के साथ खेलती थीं। उनके माता-पिता को समाज की छींटाकशी का भी शिकार होना पड़ता था। मध्यप्रदेश की क्रांति गौड़ ने आर्थिक बदहाली का जीवन जिया और प्रैक्टिस मैच के लिये पैसे की मदद न मिलने पर मां ने गहने तक बेचने पड़े। वक्त बदला है और आज मध्य प्रदेश सरकार ने उसे एक करोड़ का पुरस्कार देने की घोषणा की है। स्पिनर राधा यादव का परिवार मुंबई के कांदिवली में रहता है और उसके पिता सब्जी बेचते रहे हैं। उनकी प्रतिभा पहचानकर क्रिकेटर प्रफुल्ल नाइक ने उसके परिजनों को क्रिकेट खेलने के लिये मनाया। संगरूर जिले की रहने वाली सफल गेंदबाज अमनजोत के, पेशे से कारपेंटर पिता भूपेंदर सिंह ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। उन्होंने अपना कामधंधा दांव पर लगाया। इसी तरह हिमाचल के एक किसान परिवार से आने वाली तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर ने अपने दिवंगत पिता के सपने को पूरा किया।

राष्ट्रमंडल खेल 2030 और बुलेट ट्रेन... यानि गुजरात में फिर से भाजपा जीतेगी

> कॉमनवेल्थ गेम्स के गुजरात में होने का मतलब है राज्य की खेल अधोसंरचना का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकास होगा, युवा खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण मिलेगा, राज्य की वैश्विक ब्रांडिंग होगी और आने वाले दशक में गुजरात को भारत की खेल राजधानी (**Sports Capital of India**) बनाने की तैयारी भी साफ दिखाई दे रही है।

2030 में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों (कॉमनवेल्थ गेम्स) की मेजबानी अहमदाबाद को आधिकारिक रूप से सौंप दी गई है जिससे गुजरात की और तेज तरक्की का मार्ग प्रशस्त हो गया है। हम आपको बता दें कि अब अहमदाबाद-गांधीनगर क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर विकास की रफ्तार तेज होगी। कॉमनवेल्थ स्पोर्ट जनरल असेंबली से मंजूरी के बाद गुजरात सरकार ने घोषणा की है कि सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव और करई पुलिस अकादमी स्पोर्ट्स हब का निर्माण अप्रैल 2026 में शुरू होकर 2028–29 में पूरा होगा। हम आपको यह भी याद दिला दें कि हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सूरत में मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर की प्रगति की समीक्षा करते हुए इसे देश के भविष्य का परिवर्तनकारी मॉडल बताया था। देखा जाये तो राष्ट्रमंडल खेल और बुलेट ट्रेन, दोनों बड़े प्रोजेक्ट मिलकर गुजरात को एक नई पहचान देने जा रहे हैं और साथ ही यह 2027 के विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत को भी लगभग सुनिश्चित करेंगे। आज गुजरात एक बार फिर परिवर्तन के निर्णायक मोड़ पर खड़ा है और इस बार यह परिवर्तन न केवल आर्थिक या विकास का है, बल्कि राजनीतिक भविष्य का भी निर्धारक है। अहमदाबाद में 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी और मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर की तेज़ी से हो रही प्रगति ने गुजरात को वैश्विक मानचित्र पर नए अवतार में पेश करना शुरू कर दिया है। यह वही गुजरात है जिसने 2001–2014 के बीच विकास के जो बीज बोए थे, वे अब अंतरराष्ट्रीय रूप लेकर सामने आ रहे हैं।

कॉमनवेल्थ गेम्स के गुजरात में होने का मतलब है राज्य की खेल अधोसंरचना का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकास होगा, युवा खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण मिलेगा, राज्य की वैश्विक ब्रांडिंग होगी और आने वाले दशक में गुजरात को भारत की खेल राजधानी (Sports Capital of India) बनाने की तैयारी भी साफ दिखाई दे रही है। सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव, करई पुलिस अकादमी स्पोर्ट्स हब, नए एथलीट विलेज, हाई-परफॉर्मेंस लैब, विश्वविद्यालय आधारित स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर, ये सब गुजरात को 2030 के बाद भी स्थायी लाभ देंगे। यह वही विरासत मॉडल है जिसने लंदन 2012 और बर्मिंघम 2022 को बदल दिया। अब यही मॉडल गुजरात में दिखेगा।

हम आपको बता दें कि राष्ट्रमंडल खेलों की वजह से गुजरात में 20,000 से ज्यादा होटल कमरों की मांग, नए स्टार्टअप, पर्यटन में उछाल और 30,000 से ज्यादा नौकरियाँ बनेंगी। यह सिर्फ खेल नहीं बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण है। कॉमनवेल्थ गेम्स में भाग लेने जब पूरी दुनिया के लोग अहमदाबाद आयेंगे तो वह बाजारों से खरीदारी भी करेंगे, घूमने के लिए राज्य के विभिन्न इलाकों में भी जाएंगे जिससे गुजरात के कारोबारियों को बड़ी कमाई होना तय है।

इसके साथ-साथ प्रधानमंत्री द्वारा सूरत में बुलेट ट्रेन स्टेशन का निरीक्षण गुजरात के तेज़ी से बदलते परिवहन ढांचे की झलक है। 508 किलोमीटर के इस कॉरिडोर ने गुजरात को देश का पहला हाई-स्पीड रेल राज्य बनाने की तैयारी पूरी कर दी है। हम आपको बता दें कि 85% से अधिक मार्ग वायाडक्ट पर है, 17 नदी पुल तैयार हैं, सूरत–बिलिमोरा सेक्शन लगभग पूरा हो गया है और 2026 तक दो गुना क्षमता वाला SVPI एयरपोर्ट बन जायेगा। जब मुंबई–अहमदाबाद का सफर 2 घंटे में तय होगा, तब गुजरात सिर्फ एक राज्य नहीं रहेगा बल्कि भारत का व्यापारिक हाई-स्पीड कॉरिडोर बन जाएगा। और यही वह बिंदु है जहाँ विकास राजनीति से मिलता है। 2027 में गुजरात विधानसभा चुनाव होंगे। जनता देखेगी कि किसके पास है एजेंडा? कौन दे सकता है भविष्य की तस्वीर? और कौन दिखा सकता है कि गुजरात सिर्फ विस्तार नहीं, बल्कि दुनिया के सामने एक 'मॉडल स्टेट' है? यहाँ भाजपा की स्थिति और मजबूत हो जाती है।

कॉमनवेल्थ गेम्स और बुलेट ट्रेन, ये दोनों प्रोजेक्ट सिर्फ विकास नहीं, भावना और आकांक्षा के भी प्रतीक हैं। गुजरात का युवा इससे अपने भविष्य को जोड़ चुका है। खेल में अवसर, नौकरी में वृद्धि और तकनीकी अधोसंरचना का नया युग आने वाले हैं। राजनीतिक दृष्टि से भाजपा ने 2027 की चुनावी पिच पर दो बड़े "विकास–सिक्सर" पहले ही जड़ दिए हैं। एक तरफ अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन की चमक, दूसरी तरफ बुलेट ट्रेन का आधुनिक भारत। यह पूरा नैरेटिव भाजपा के पक्ष में एकतरफा वातावरण बनाता है। विपक्ष भले ही अपने मुद्दे तलाश रहा हो, लेकिन उसके पास इस स्तर का कोई प्रतिविकल्पी विकास मॉडल नहीं है।

इसलिए निष्कर्ष अत्यंत स्पष्ट है। 2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स और बुलेट ट्रेन, दोनों मिलकर गुजरात को अगले दशक के लिए पूरी तरह बदलने जा रहे हैं। यही परिवर्तन की राजनीति भाजपा को 2027 के चुनाव में एक बार फिर भारी जीत की ओर ले जाती दिखाई दे रही है। गुजरात को विकास की जो दूरदृष्टि चाहिए वह इन दो विशाल परियोजनाओं के रूप में, पहले ही भाजपा के पास है।

सरोकार

विनम्र मन की यात्रा

बेंजामिन फ्रैंकलिन की युवावस्था ऐसी थी जैसे एक तेज़ धार वाली नदी—गति में अद्भुत, दिशा में मजबूत, और भीतर से आत्मविश्वास से भरी हुई। वे जहाँ भी खड़े होते, अपनी बुद्धि की चमक से लोगों को प्रभावित कर देते। तर्क उनके हथियार थे और भाषा उनका कवच। पर इस चमक के भीतर एक महीन-सा अहंकार भी छिपा था, जो उन्हें दिखाई नहीं देता था, लेकिन आसपास के लोगों को महसूस होता था।

एक शाम, उनके एक बहुत अनुभवी और स्नेहमयी मित्र ने कहा, "बेंजामिन, तुम्हारी वाणी में आग बहुत है, पर प्रकाश कम। तुम बहस जीत लेते हो, पर दिल नहीं।"

फ्रैंकलिन पहली बार निरुत्तर हो गए। उन्होंने धीमे से पूछा, "क्या मेरी बातों में इतनी कठोरता है?"

मित्र ने शांत स्वर में कहा, "ज्ञान तभी पूर्ण होता है जब वह विनम्रता के साथ चलता है। जो व्यक्ति सुनने से पहले बोलने लगता है, वह अक्सर सत्य के बजाय अहंकार को आगे करता है। यदि तुम महान बनना चाहते हो, तो पहले अपने भीतर के अहंकार को शांत करो।"

ये शब्द साधारण नहीं थे; उन्होंने फ्रैंकलिन के भीतर कहीं गहराई में छिपी किसी डोर को झंकृत कर दिया। उसी रात उन्होंने अपनी डायरी खोली और एक वाक्य लिखा—

"मैं बोलने से अधिक सुनूंगा। हर व्यक्ति के भीतर एक कहानी है; मैं उसे जानने का प्रयास करूंगा।"

यह वचन केवल लिखा नहीं गया, बल्कि उनके भीतर उतरा और धीरे-धीरे उनके स्वभाव का हिस्सा बन गया।

कुछ महीनों बाद, संसद में एक अत्यंत निर्णायक सत्र आयोजित हुआ था। देश की नीतियों पर कई बड़े नेताओं की बहस चल रही थी। पर बहस कम, शोर अधिक था। हर व्यक्ति अपने विचार को सर्वोच्च साबित करने में लगा था। कोई किसी को सुनने को तैयार नहीं था। कमरे का वातावरण ऐसा था जैसे कई लपटें एक साथ हवा में उठ रही हों—तेज़, बिखरी हुई, दिशा-विहीन।

फ्रैंकलिन उस दिन अपनी कुर्सी पर शांत बैठे थे। वे हर तर्क, हर आरोप, हर चिंता को ध्यान से सुन रहे थे। उनका मौन विचित्र था—यह कमजोरों का मौन नहीं, बल्कि किसी गहन व्यक्ति का। वह मौन जो भीतर से कहता है कि शब्द तभी निकलेंगे जब उनकी आवश्यकता होगी।

घंटों बीत गए, और अंततः कमरे की ऊर्जा थककर बैठ गई। आवाज़ें कम हुईं और थोड़ी देर के लिए सन्नाटा पसर गया। उसी क्षण फ्रैंकलिन उठे। उनकी आँखें शांत थीं, कदम संयत, और स्वर—जैसे किसी दीपक की लौ धीरे से हवा को छू रही हो।

उन्होंने कहा,

"यदि हम सचमुच समाधान चाहते हैं, तो पहले हमें एक-दूसरे को सुनना होगा। बहस की ऊँची आवाजें निर्णय नहीं जन्म देतीं—समझ और धैर्य देता है। जब हम सुनते हैं, तो हम सीखते हैं, और जब सीखते हैं, तभी समाधान अपने आप सामने आता है।"

उनकी बात न लंबी थी, न जटिल—लेकिन उसमें ऐसी सहज गहराई थी कि पूरा कमरा जैसे किसी अदृश्य शक्ति से शांत हो गया।

लोग पहली बार समझ पाए कि शक्ति जोर में नहीं, संयम में होती है; तेज़ी में नहीं, विनम्रता में होती है।

बैठक समाप्त होने के बाद एक वरिष्ठ नेता उनके पास आए और बोले,

"आज मुझे समझ आया कि सबसे प्रबल आवाज़ वह नहीं होती जो सबसे ऊँची हो, बल्कि वह होती है जो सबसे गहरी हो। तुमने यह भी दिखा दिया कि महानता केवल ज्ञान में नहीं, बल्कि उस ज्ञान को विनम्रता के साथ प्रस्तुत करने में है।"

फ्रैंकलिन ने हल्की मुस्कान के साथ उत्तर दिया,

"विनम्रता बुद्धि का पहला द्वार है। जो मन सुनता है, वही मन दुनिया को समझता है।"

समय बीतता गया, पर वह दिन फ्रैंकलिन के जीवन का मोड़ बन गया। अब लोग उनकी बातों को केवल बुद्धिमत्ता के लिए नहीं, बल्कि उनकी सहजता और शांति के लिए भी सम्मान देते थे। उनकी वाणी से आग समाप्त नहीं हुई थी, पर वह अब प्रकाश में बदल चुकी थी—एक ऐसा प्रकाश जो सामने वाले को तपाता नहीं, रास्ता दिखाता है।

इस कहानी का संदेश बहुत सरल है, पर जीवन बदल देने वाला—

विनम्रता ज्ञान का सौंदर्य है, और सुनना मनुष्य का सबसे बड़ा सामर्थ्य।

बोलना एक कौशल है, लेकिन सुनना एक चरित्र है।

हिंदी में शपथ : नए भारत की भाषाई चेतना का निर्णायक उद्घोष

भारत के 53वें प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत द्वारा हिंदी में शपथ लेना भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में केवल एक औपचारिक घटना नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और मनोवैज्ञानिक चेतना का नया शुभारंभ है। यह वह क्षण है जिसने भाषा को लेकर दशकों से चले आ रहे संकीर्ण विवादों, राजनीतिक विरोधाभासों और कृत्रिम विभाजनों पर एक गहरी चोट की है। हिंदी में शपथ का यह निर्णय राष्ट्रीय मानस में इस भावना को पुनः स्थापित करता है कि भाषा का प्रश्न केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का प्रतीक है। यह निर्णय उस विरोधाभास पर भी प्रकाश डालता है जिसमें विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी को अपने ही देश में सबसे अधिक उपेक्षा, संकोच और राजनीतिक विरोध का सामना करना पड़ता रहा है। भारत में भाषा सदैव राजनीति का एक सुविधाजनक औज़ार रही है। कुछ दशकों से चले आ रहे भाषाई आंदोलन और हिंदी-विरोधी राजनीति ने देश की एकता को अक्सर चुनौती दी है। क्षेत्रवाद की आड़ में कुछ राजनीतिक दलों ने हिंदी को एक क्षेत्र विशेष की भाषा बताकर उसका महत्व कम करने का प्रयास किया। लेकिन यह तर्क न तो व्यावहारिक था और न ही ऐतिहासिक। हिंदी किसी क्षेत्र की भाषा नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के हृदय की भाषा है, जनमानस की अभिव्यक्ति है, भारत की आत्मा की धड़कन है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत द्वारा हिंदी में शपथ लेना इस सत्य को पुनः उद्घाटित करता है कि भारतीय लोकतंत्र की संवैधानिक संस्थाएँ केवल कानून और प्रशासन की रक्षा ही नहीं करतीं, बल्कि भारतीयता और राष्ट्रीय अस्मिता को भी नई दिशा देती हैं। यह कदम यह संदेश देता है कि नई पीढ़ी की संस्थाएँ अब संकोच नहीं, आत्मविश्वास के साथ भारत की भाषा में अपने कर्तव्यों की शुरुआत कर रही हैं।

हिंदी को लेकर जो विरोधाभास पैदा किया जाता रहा है, वह वास्तव में एक कृत्रिम एवं आग्रह-दुराग्रहपूर्ण द्वंद्व है। आज के वैश्विक दौर में भाषा का महत्व उसकी लोकस्वीकृति और उपयोगिता से तय होता है। हिंदी वैश्विक भाषाओं की सूची में तेजी से ऊपर बढ़ रही है। करीब 113 करोड़ के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर है. 111 करोड़ के साथ चीनी दूसरे स्थान पर है, इसके बाद हिन्दी का स्थान आता है। करीब 61.5 करोड़ विश्व में, हिन्दी को बोलने वाल लोगों की संख्या के आधार पर तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा का स्थान प्राप्त है। हिंदी का प्रभाव विश्व में बढ़ रहा है और यह सोशल मीडिया व संचार माध्यमों में भी लगातार उपयोग हो रही है। दुनिया भर के 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। देवनागरी लिपि को दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपियों में से एक माना जाता है। भारत सरकार की पहल के बाद से, संयुक्त राष्ट्र ने भी साप्ताहिक हिंदी समाचार बुलेटिन शुरू किया है। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, मोरिशस, दक्षिण अफ्रीका, खाड़ी देशों और यूरोप में हिंदी सीखने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी साहित्य, भाषाविज्ञान और अनुवाद अध्ययन का विस्तार हुआ है। हिंदी फिल्में, वेब प्लेटफॉर्म और मीडिया विश्व संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ रहे हैं। यह वह समय है जब हिंदी वैश्विक मंच पर उभर रही है, लेकिन अपने ही देश में उसे राजनीति और संकीर्णताओं का शिकार होना पड़ रहा है। यही वह असंगति है जिसे न्यायमूर्ति सूर्यकांत की शपथ ने बड़े सौम्य किंतु तीव्र संदेश के साथ उजागर किया है कि जब दुनिया हिंदी को सम्मान दे रही है तो भारत में उसकी उपेक्षा किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं हो सकती।

राष्ट्रीय प्रतीक केवल वस्तुएँ नहीं होते, वे राष्ट्र की चेतना के वाहक होते हैं। राष्ट्रध्वज केवल कपड़े का टुकड़ा नहीं, करोड़ों लोगों के स्वाभिमान और बलिदान का प्रतीक है। राष्ट्रगान केवल धुन नहीं, बल्कि भारत की समष्टिगत भावना का सूत्र है। उसी प्रकार राष्ट्र की भाषा-चाहे उसे हम राजभाषा कहें या राष्ट्रभाषा भारतीय पहचान और राष्ट्रीय एकता का अदृश्य धागा है। नए भारत का निर्माण तभी संभव है जब हम इन प्रतीकों का सम्मान केवल संविधान की धाराओं में नहीं, बल्कि हृदय में करें। हिंदी को लेकर जो संकोच, झिझक और कृत्रिम विरोध दशकों से बना हुआ था, वह राष्ट्रीय आत्मविश्वास के लिए बाधक था। हिंदी में शपथ लेकर न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने इस मानसिक दरार को पाटने में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल में हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने का साहसिक कार्य किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा से लेकर ब्रिक्स, जी-20 और अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उन्होंने हिंदी में संबोधन देकर दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत अपनी भाषा को लेकर हिचकता नहीं, बल्कि गर्व करता है। इससे पहले अटल बिहारी वाजपेयी ने भी संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देकर ऐतिहासिक परंपरा की शुरुआत की थी। उनकी वाणी में हिंदी केवल शब्द नहीं थी, बल्कि भारत की आत्मा की ध्वनि थी। नरेंद्र मोदी ने इस परंपरा को राष्ट्रीयता, आधुनिकता, आत्मविश्वास और वैश्विक उपस्थिति के साथ आगे बढ़ाया है। उन्हें यह समझ थी कि भाषा राष्ट्रीय चेतना की नींव होती है, और जिस राष्ट्र को विश्व नेतृत्व की आकांक्षा है, उसे अपनी भाषा पर गर्व करना ही होगा।

नजरिया

नारद का दर्प और भगवान की माया का अद्भुत लीला–प्रसंग

उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती

नारद मुनि उस समय अहंकार के ऐसे अश्व पर सवार थे जिसकी गति का अनुमान देवता भी न लगा सकें। यह अश्व चलता नहीं, उड़ता था—और वह भी इतना ऊँचा, इतना तीव्र कि स्वयं गरुड़ भी उसकी उड़ान देखकर विस्मित हो जाएँ। यह केवल गति नहीं थी, यह मुनि के भीतर जन्मा वह गर्व था जिसे स्वयं नारद भी पहचान नहीं पा रहे थे। उनके मन में यह बात बैठ चुकी थी कि कामदेव को परास्त करने वाला, सभी लोकों में विचरण करने वाला, और अपनी वाणी से सत्पथ का उपदेश देने वाला उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं।

भगवान विष्णु बैकुण्ठ से इस संपूर्ण नाटक को देख रहे थे। उन्होंने मुस्कुराकर निश्चय किया—"यह अहंकार यदि इसी प्रकार बढ़ता रहा, तो मुनि स्वयं अपने धर्म से विचलित हो जाएँगे। अब समय आ गया है कि उन्हें उनकी सीमाएँ याद दिलाई जाएँ।" भगवान का संकल्प लीला का प्रारम्भ था और मुनि का अहंकार उसका केंद्र।

नारद बैकुण्ठ पहुँचे। भगवान ने उन्हें वैसे कठोर उपदेश नहीं दिए जैसे महादेव ने दिए थे। नारद के मन में यह बात तुरंत घर कर गई—"भगवान विष्णु ने मेरी महत्ता को पहचाना है। उन्होंने मेरी प्रशंसा में मौन स्वीकार कर लिया है।" इस स्वीकार को मुनि अहंकार समझें या आशीर्वाद, यह भ्रम उन्हें सुख देता रहा। वे भगवान को प्रणाम कर बैकुण्ठ से प्रसन्न होकर लौटे—परंतु उन्हें पता ही न था कि उनके रास्ते में एक दिव्य जाल फैला दिया गया है। एक ऐसा जाल जो माया से नहीं, बल्कि उनके भीतर छिपी उस कमजोरी से बना था, जो अब जागने वाली थी।

भगवान विष्णु ने उसी मार्ग पर एक अनुपम माया–नगरी का निर्माण किया। उसकी चमक बैकुण्ठ से भी अधिक थी। स्वर्ण, रत्न, मोती, संगीत, सुगंध, सौंदर्य—सब कुछ वहाँ अपनी सीमा से परे था। कोई भी देवता उसे देख ले, तो सोचने लगे कि यह स्थान स्वर्ग से ऊपर किस दिव्यता का है।

उस नगरी का राजा था—शीलनिधि। यशस्वी, तेजस्वी, शूरवीर और सौ इन्द्रों के समान ऐश्वर्य वाला। उसकी एक पुत्री थी—विश्वमोहिनी। नाम जैसा, रूप वैसा। ऐसी सुंदरता कि स्वयं लक्ष्मीजी भी उसे देखकर चकित हो जाएँ। उसकी आँखें कमल के समान, वाणी मधुमक्खी की गुंजन जैसी मधुर, और चाल ऐसी जैसे सृष्टि की लय उसी से संचालित हो।

नगर में भीड़ थी—दूर–दूर से आए राजा, महाराजा, योद्धा—सब विश्वमोहिनी के स्वयंवर में भाग लेने आए थे। चारों ओर गंधर्व–गीत, पुष्पों की वर्षा और उत्सव की गूंज।

नारद ने यह नगर देखा तो पहले ही क्षण में चकित रह गए। उन्होंने सोचा—"मैं तो अनगिनत बार इस मार्ग से गुज़रा हूँ, पर ऐसा विलक्षण नगर कभी तो नहीं दिखा? अवश्य कोई विशेष बात है।"

वे नगर में प्रवेश कर गए। नगरवासियों ने उन्हें आदर दिया, राजा ने चरण पखारे, आसन दिया, और पूरा सम्मान किया। नारद के भीतर अहंकार की लहर एक बार फिर उठी—

"देखो! मैंने कामदेव को परास्त किया और अब संसार मेरे चरणों में है।"

तभी राजा ने अपनी पुत्री विश्वमोहिनी को बुलाया।

जैसे ही विश्वमोहिनी ने प्रांगण में प्रवेश किया, नारद मुनि क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गए। उनकी आँखें अपलक हो गईं। जिसने कामदेव को परास्त किया था, वह आज काम के अदृश्य बाणों से घायल हो उठा।

उन्होंने उसके लक्षण देखे, हस्तरेखाएँ देखीं—और उनके भीतर कोई गुप्त ज्वाला जल उठी।

उसकी हस्तरेखाओं में कुछ ऐसा लिखा था जिसने उनके मन में एक गहरा आकर्षण जगा दिया।

मुनि के चेहरे पर आनंद था, पर वे दिखा नहीं रहे थे।

हृदय भीतर नाच रहा था, पर चेहरा संत की तरह शांत था।

अब अहंकार का दूसरा रूप प्रकट हुआ—

"कामदेव को हराया, अब विश्वमोहिनी जैसी कन्या भी मेरे भाग्य में हो सकती है।"

देवर्षि नर–नारी दोनों के मन को पढ़ सकते थे, पर इस समय वे अपने मन के मोह को पढ़ ही नहीं पाए।

मालिक जयेश जग्शी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई) कार्यकारी संपादकः अरविंद मिश्रा, सहसंपादकः सुजीत मिश्रा (दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084 ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

महाराष्ट्र में बढ़ते अतिक्रमण से प्रकृति पर संकट, डॉ. प्रशांत सिनकर की मुख्यमंत्री से तत्काल कार्रवाई की अपील

ठाणे। महाराष्ट्र में सरकारी और वनभूमि पर बढ़ते गैर-कानूनी अतिक्रमण को पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा बताते हुए पर्यावरणविद् डॉ. प्रशांत रेखा रवींद्र सिनकर ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से तुरंत दखल देने की अपील की है। उन्होंने कहा कि राज्य के कई हिस्सों में नकली दस्तावेज़, मिलीभगत और बिना अनुमति निर्माण कार्यों के जरिए सरकारी जमीन पर कब्ज़े तेजी से बढ़ रहे हैं, जिसका सीधा असर प्रकृति और आने वाली पीढ़ियों पर पड़ रहा है।

डॉ. सिनकर के अनुसार पहाड़ियों, खाड़ियों, नालों, जलाशयों, घासभूमि और संवेदनशील जंगलों में हो रहे अतिक्रमण से वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहा है, भूजल स्तर गिर रहा है, गर्मियों में तेज गर्मी, मॉनसून में बाढ़ और प्रदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि यह स्थिति पूरी तरह मानव-निर्मित संकट है, जिसके दुष्परिणाम हर नागरिक को झेलने पड़ेंगे।

उन्होंने यह भी चिंता जताई कि अतिक्रमण के खिलाफ आवाज़ उठाना आम लोगों के लिए खतरनाक हो गया है। राजनीतिक दबाव, धमकियों और उत्पीड़न के डर से नागरिक खुलकर सामने नहीं आते। इसी गंभीर परिस्थिति को देखते हुए डॉ. सिनकर ने मुख्यमंत्री को अविलंब कार्रवाई करने की विनम्र अपील की है। उन्होंने इस दिशा में राज्यव्यापी विशेष जांच अभियान, हाई-लेवल पर्यावरण संरक्षण समिति, शिकायतकर्ताओं की सुरक्षा, नेचर रेस्टोरेशन योजना और रेवेन्यू रिकॉर्ड में हेराफेरी पर कड़ी कार्रवाई जैसे कदम उठाने की जरूरत बताई।

डॉ. सिनकर ने कहा कि सरकारी जमीन ही महाराष्ट्र की असली सांस है और यदि अतिक्रमण को अब भी नहीं रोका गया, तो प्रकृति स्वयं खत्म हो जाएगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि राज्य सरकार इस मुद्दे को गंभीरता से लेकर समय रहते सख्त कदम उठाएगी, क्योंकि यह सिर्फ उनकी नहीं बल्कि पूरे महाराष्ट्र की आवाज़ है।

भिवंडी में मतदाता सूची में जानबूझकर गड़बड़ी का भाजपा का आरोप, कर्मचारियों पर कार्रवाई की माँग

भिवंडी। भिवंडी महानगरपालिका की वार्ड-वार मसौदा मतदाता सूची तैयार करते समय पालिका कर्मचारियों, भूभाग लिपिकों और बीट निरीक्षकों ने आर्थिक लाभ के लिए जानबूझकर गड़बड़ी की है, ऐसा गंभीर आरोप भिवंडी भाजपा शहराध्यक्ष रवि सावंत ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में लगाया। इस मौके पर भाजपा पदाधिकारी श्याम अग्रवाल, ममता परमाणी, विकास बाफना, श्याम भोईर, प्रवीण मिश्रा, मोहन कोंडा, राजू गाजंगी सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

सावंत ने कहा कि चुनाव विभाग द्वारा मसौदा मतदाता सूची प्रकाशित होने के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं ने उसका परीक्षण किया, जिसमें कई नाम दो बार दर्ज पाए गए। इसके अलावा कई वार्डों के मतदाताओं के नाम जानबूझकर अन्य वार्डों की सूची में जोड़ दिए गए, जिससे स्थानीय मतदाताओं के अधिकारों पर सीधा असर पड़ा है। उन्होंने कहा कि इस गड़बड़ी को लेकर सभी राजनीतिक दलों की ओर से असंतोष जताया जा रहा है और भाजपा ने मांग की है कि चुनाव पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता से हों। भाजपा नेता श्याम अग्रवाल ने आरोप लगाया कि मसौदा सूची बनाते समय वास्तविक स्थल निरीक्षण किए बिना भूभाग लिपिकों ने आर्थिक स्वार्थ के चलते मतदाता सूची में फेरबदल किया। उनके अनुसार मानसरोवर स्थित वार्ड क्रमांक 22 के मतदाताओं के नाम वार्ड क्रमांक 17 में शामिल कर दिए गए हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि बी.एल.ओ. क्षेत्र में काम कर रहे हैं, इसके बावजूद विधायक रईस शेख कुछ नाम हटाने के लिए कर्मचारियों पर दबाव बना रहे हैं। अग्रवाल ने बताया कि भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग के ससुर जवाहरलाल खन्ना और मोतीलाल गुप्ता कई वर्षों से भिवंडी में निवास कर रहे हैं, फिर भी विधायक रईस शेख के दबाव में उनके नामों समेत लगभग 300 नाम हटाने के लिए आवेदन किए गए हैं।

भाजपा का कहना है कि जब कर्मचारी स्वयं गड़बड़ी में शामिल हों, तो मतदाताओं को न्याय कैसे मिलेगा। पार्टी ने मांग की है कि दोषी कर्मचारियों और अधिकारियों पर तुरंत कार्रवाई की जाए, ताकि आगामी नगरपालिका चुनाव निष्पक्ष और निर्भीक वातावरण में संपन्न हो सकें।

भिवंडी व शिल-कळवा-मुंब्रा में टोरेंट पावर–महावितरण का ग्राहक सेवा शिविर सफल, 700 से अधिक उपभोक्ताओं ने ली सुविधा

भिवंडी। टोरेंट पावर और महावितरण (MSEDCL) द्वारा 25 नवंबर को शिल स्थित अरिहंत कार्यालय तथा 26 नवंबर को भिवंडी के चाविंद्र स्थित अर्श कार्यालय में आयोजित विशेष ग्राहक सेवा शिविर को उपभोक्ताओं से अत्यंत सकारात्मक प्रतिसाद मिला। दोनों स्थानों पर मिलाकर 700 से अधिक लोगों ने शिविर में भाग लेकर विभिन्न सेवाओं का लाभ उठाया।

शिविर में मुख्य रूप से महावितरण के पिछले लंबित बकाया मामलों पर मार्गदर्शन दिया गया, जहाँ अधिकारियों ने ग्राहकों को आंशिक भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराकर सहायता की। टोरेंट पावर के अधिकारियों ने उपभोक्ताओं को बिलिंग और विजिलेंस से संबंधित विषयों पर जानकारी दी, साथ ही डिजिटल भुगतान, विद्युत सुरक्षा, ऊर्जा संरक्षण, बिजली चोरी की रोकथाम और नए बिजली टैरिफ के बारे में जागरूकता बढ़ाई।

इस अवसर पर महावितरण के वरिष्ठ अधिकारी, टोरेंट पावर के उपाध्यक्ष जीवन क्लर्क, महाप्रबंधक अंकित साहा, राघवेंद्र राव, विजय राणे, संपदा जाइंट सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। उपभोक्ताओं ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि महावितरण अधिकारियों के साथ ऐसे शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे विभिन्न मुद्दों पर सीधे संवाद का अवसर मिलता है।

फेडएक्स और गति शक्ति विश्वविद्यालय की साझेदारी, लॉजिस्टिक्स व सप्लाई चेन के नए टैलेंट को देगी मजबूती

मुंबई। दुनिया की अग्रणी एक्सप्रेस परिवहन कंपनी फेडएक्स और संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित केंद्रीय संस्थान गति शक्ति विश्वविद्यालय ने लॉजिस्टिक्स शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए एक आशय पत्र (LOI) पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस सहयोग के तहत लर्निंग मॉड्यूल्स का सह-विकास, वास्तविक केस स्टडीज़, अतिथि व्याख्यान, वर्कशॉप्स और छात्रों को उद्योग से जुड़े व्यावहारिक अनुभव उपलब्ध कराने जैसे उपाय शामिल हैं। इसका उद्देश्य छात्रों को आधुनिक लॉजिस्टिक्स सेक्टर की चुनौतियों, नवाचारों और बदलते रुझानों की गहरी समझ देना है।

फेडएक्स के भारत संचालन, नियोजन एवं इंजीनियरिंग के वाइस प्रेसिडेंट सुवेंदु चौधरी ने कहा कि तेजी से विकसित होते लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में नई पीढ़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, और यह साझेदारी उन्हें जॉब-रेडी कौशल प्रदान करने में सहायक होगी।

गति शक्ति विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो. मनोज चौधरी ने कहा कि यह सहयोग डिजिटल और उन्नत तकनीक आधारित लॉजिस्टिक्स सिस्टम को गति देगा। उन्होंने फेडएक्स की कौशल विकास के प्रति दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का उल्लेख करते हुए IIT मद्रास, IIT बॉम्बे के साथ बने 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' और डिजिटल अपस्किलिंग कार्यक्रमों को भी रेखांकित किया।

ई-चालान मामलों के निपटारे का मौका, ड्राइवर 5 दिसंबर से पहले ट्रैफिक सब-डिविजनल ऑफिस से संपर्क करें

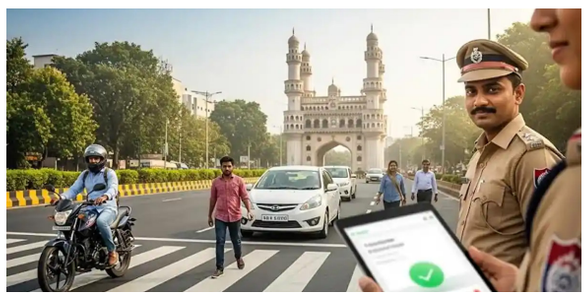

ठाणे। ट्रैफिक नियम तोड़ने वाले ड्राइवरों के लंबित ई-चालान मामलों के निपटारे के लिए 13 दिसंबर 2025 को नेशनल लोक अदालत आयोजित की जाएगी। इसके तहत ठाणे सिटी ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने अपील की है कि जिन ड्राइवरों पर जुर्माना बकाया है, वे 5 दिसंबर से पहले अपने नजदीकी ट्रैफिक सब-डिविजनल ऑफिस में संपर्क करें।

5 दिसंबर से पहले संपर्क करने पर जुर्माने की राशि कम होने की संभावना है, जबकि 13 दिसंबर को सीधे लोक अदालत में आने वालों को पूरी जुर्माना राशि भरनी पड़ेगी। परिवहन विभाग ने अधिकाधिक ड्राइवरों से इस अवसर का लाभ उठाकर लंबित ई-चालान मामलों का जल्द निपटारा करने की अपील की है।

सलमान खान की 'बैटल ऑफ गलवान' को रिलीज से पहले 325 करोड़ की मेगा डील

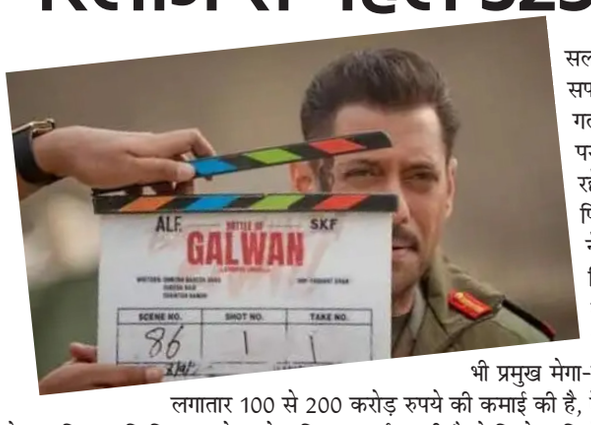

सलमान खान की पिछली फिल्म 'सिकंदर' भले ही बॉक्स ऑफिस पर अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पाई, लेकिन उनकी अगली फिल्म 'बैटल ऑफ गलवान' ने रिलीज से पहले ही इंडस्ट्री में बड़ा धमाका कर दिया है। देशभक्ति पर आधारित इस बड़े स्केल के एक्शन ड्रामा को अपूर्व लाखिया निर्देशित कर रहे हैं, और फिल्म को लेकर दर्शकों में जबरदस्त उत्सुकता बनी हुई है।

फिल्म इंडस्ट्री में हलचल मचाने वाली खबर यह है कि जियो स्टूडियोज ने 'बैटल ऑफ गलवान' के ऑडियो, सैटेलाइट, डिजिटल स्ट्रीमिंग और थियेट्रिकल डिस्ट्रीब्यूशन सहित सभी बड़े अधिकार करीब 325 करोड़ रुपये में खरीद लिए हैं। यह सौदा न सिर्फ सलमान खान के करियर की सबसे बड़ी प्री-रिलीज डील में शामिल है, बल्कि हाल के वर्षों में हिंदी फिल्म उद्योग की भी प्रमुख मेगा-डील्स में गिनी जा रही है। सलमान खान की फिल्मों ने पिछले कई वर्षों में लगातार 100 से 200 करोड़ रुपये की कमाई की है, ऐसे में 'बैटल ऑफ गलवान' से भी बेहतरीन प्रदर्शन की उम्मीद है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, यदि फिल्म अपेक्षा से अधिक कमाई करती है तो जियो स्टूडियोज निर्माताओं को 325 करोड़ से अधिक राशि भी दे सकता है, जबकि कम कमाई होने पर भुगतान रकम उसी आधार पर समायोजित की जाएगी। यह नया मॉडल बड़े बजट की फिल्मों में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

2026 में रिलीज के लिए तैयार यह फिल्म युद्ध दृश्यों, दमदार एक्शन और भावनात्मक कहानी के कारण पहले से ही चर्चा में है। फैंस को उम्मीद है कि यह फिल्म सलमान खान की फिल्मोग्राफी में एक और प्रभावशाली देशभक्ति फिल्म साबित होगी।

'रात अकेली है 2: द बंसल मर्डर्स' का टीज़र हुआ रिलीज, नवाजुद्दीन सिद्दीकी लौटे और रहस्य और भी गहरा हुआ

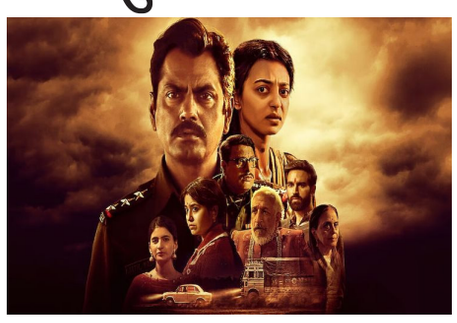

बॉलीवुड अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी अपने जबरदस्त अभिनय और तीव्र स्क्रीन प्रेजेंस के साथ एक बार फिर दर्शकों के बीच लौट आए हैं। 2020 में उनकी सुपरहिट क्राइम-थ्रिलर फिल्म 'रात अकेली है' ने दर्शकों को रहस्य और रोमांच का एक नया अनुभव दिया था और अब उसी दुनिया को और गहरे, रहस्यमयी अंदाज में आगे बढ़ाया गया है। फिल्म का नाम है 'रात अकेली है 2: द बंसल मर्डर्स', जिसका टीज़र हाल ही में जारी किया गया है और यह पहले ही से दर्शकों में उत्सुकता की लहर दौड़ा रहा है। टीज़र में इंस्पेक्टर जटिल यादव की भूमिका में नवाजुद्दीन का गंभीर और इंटेंस अवतार दिखाई दे रहा है। टीज़र की एक लाइन, "इंस्पेक्टर जटिल का रात के अंधेरे से पुराना रिश्ता है, लेकिन बंसल हत्याकांड का मामला और भी गहरा है," ने दर्शकों में कहानी के रहस्यमयी पहलू को उजागर किया है। फिल्म का बैकग्राउंड साउंड, माहौल और छायांकन इसे पहले से ज्यादा तीव्र और रोमांचक बनाते हैं। निर्माताओं ने फिल्म को और विशेष बनाने के लिए इसका वर्ल्ड प्रीमियर 56वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफआई), गोवा में तय किया है। यह कदम संकेत देता है कि फिल्म सिर्फ एक क्राइम-थ्रिलर नहीं बल्कि सिनेमा का एक दमदार और अंतरराष्ट्रीय स्तर का अनुभव होने वाली है। फिल्म की कहानी कानपुर की पृष्ठभूमि पर आधारित है और इसमें इंस्पेक्टर जटिल यादव को ऐसे राज़ों का सामना करना पड़ेगा जो रात की खामोशी से कहीं अधिक भयावह हैं। फिल्म में नवाजुद्दीन के अलावा कई अनुभवी और बड़े कलाकार शामिल हैं, जो पहले फिल्म की तरह ही दर्शकों को रोमांचित करने का वादा करते हैं। 'रात अकेली है 2' 19 दिसंबर को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी, जिससे यह दुनियाभर के दर्शकों तक आसानी से पहुंच सकेगी। निर्माता बताते हैं कि सीक्वल में कथानक और भी जटिल है, केस उलझा हुआ है और थ्रिलर का स्तर पहली फिल्म से कहीं ज्यादा है। टीज़र की झलक ने पहले ही दर्शकों को यह अहसास दिला दिया है कि इस बार कहानी में रहस्य और भय की परतें और भी गहरी होंगी। फिल्म के मेकर्स का कहना है कि 'रात अकेली है 2' केवल कहानी सुनाने की फिल्म नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो दर्शकों को पूरी तरह बांधकर रखेगा। नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ कलाकारों की मजबूत कास्ट और कहानी की तीव्रता इसे इस साल की सबसे चर्चित थ्रिलर फिल्मों में शुमार करेगी।

पति धर्मेंद्र के निधन पर हेमा मालिनी का भावुक श्रद्धांजलि पोस्ट, यादों में ढूँढ रही हैं सहारा

बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र का 24 नवंबर को 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके जाने से न केवल फिल्म उद्योग बल्कि देश-विदेश में फैले उनके चाहने वाले शोक में डूब गए हैं। देओल परिवार की ओर से आधिकारिक बयान अब सामने आया है, जिसमें अभिनेत्री और धर्मेंद्र की पत्नी हेमा मालिनी ने सोशल मीडिया पर एक बेहद भावुक पोस्ट साझा की। हेमा ने धर्मेंद्र की एक पुरानी तस्वीर शेयर करते हुए लिखा कि धर्मेंद्र उनके लिए केवल पति नहीं बल्कि दोस्त, मार्गदर्शक, दार्शनिक और बेटियों ईशा देओल व अहाना देओल के प्रिय पिता थे। उन्होंने बताया कि धर्मेंद्र हर परिस्थिति में उनके और परिवार के साथ मजबूती से खड़े रहे। हेमा ने कहा, ₹धरम जी मेरे लिए सबकुछ थे। अच्छे-बुरे हर दौर में उन्होंने हमारे साथ मजबूती से खड़ा रहना सुनिश्चित किया। वे परिवार के हर सदस्य के प्रिय थे और हमेशा अपना स्नेह बनाए रखते थे। हेमा ने आगे लिखा कि धर्मेंद्र का सार्वजनिक व्यक्तित्व होने के बावजूद उनकी विनम्रता और सादगी ने उन्हें अनोखी पहचान दी। उनकी प्रतिभा और लोकप्रियता ने उन्हें फिल्म उद्योग में एक अलग मुकाम दिया। हेमा ने कहा कि उनके जाने से जो खालीपन उनके जीवन में आया है, वह जीवनभर उनके साथ रहेगा। लंबे समय तक साथ बिताने के बाद अब बस यादें ही संभालने के लिए बची हैं। धर्मेंद्र पिछले कुछ समय से गंभीर रूप से बीमार चल रहे थे। हालात बिगड़ने पर उन्हें मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया। 12 नवंबर की सुबह परिवार ने उन्हें घर मुंबई के जुहू स्थित निवास पर ले आया, जहां उनका इलाज चल रहा था। लेकिन 24 नवंबर की सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली और दुनिया को अलविदा कह दिया। बॉलीवुड जगत में धर्मेंद्र की उपलब्धियां और योगदान सदैव याद किए जाएंगे। उनके जाने से फिल्म इंडस्ट्री और फैंस के बीच एक अपूरणीय खालीपन पैदा हुआ है। हेमा मालिनी की पोस्ट में दिखाई गई भावनाएं दर्शाती हैं कि उनके लिए धर्मेंद्र केवल पति नहीं, बल्कि जीवन का वह आधार थे, जिनकी अनुपस्थिति अब जीवन में गहरा असर छोड़ जाएगी।

स्टार प्लस का नया ड्रामा 'शहज़ादी है तू दिल की' पेश करता है रोमांच और भावनाओं का संगम, प्रोमो ने बढ़ाई उत्सुकता

स्टार प्लस अपने नए शो 'शहज़ादी है तू दिल की' के प्रोमो के साथ दर्शकों के बीच हलचल पैदा कर चुका है। प्रोमो में धमाकेदार एक्शन और गहरी भावनाओं का शानदार मिश्रण दिखाया गया है, जो एक रोमांचक और संवेदनशील लव स्टोरी का अहसास कराता है। यह कहानी उत्तर भारत की गर्मजोशी और दक्षिण भारतीय संस्कृति की सादगी को जोड़ते हुए एक अनोखे रिश्ते की नींव रखती है। शो में मशहूर तेलुगु अभिनेत्री अशिका पाडुकोण हिंदी टीवी में डेब्यू कर रही हैं। वे दीपा के किरदार में नजर आएंगी, जो मजबूत, संघर्षशील और संवेदनशील महिला की भूमिका निभा रही हैं। दीपा अपने जीवन की कठिनाइयों का सामना करती हैं, जिसमें शराबी पति, आर्थिक बोझ और रोज़मर्रा की चुनौतियां शामिल हैं। उनकी जिंदगी में बदलाव तब आता है जब अंकित राइज़ादा द्वारा निभाया गया कार्तिक उनकी मदद करता है। कार्तिक का शांत और दमदार व्यक्तित्व दीपा के संघर्षशील स्वभाव को खूबसूरती से संतुलित करता है। प्रोमो में दीपा और कार्तिक के बीच की भावनात्मक केमिस्ट्री को बड़े ही खूबसूरत अंदाज़ में पेश किया गया है। दीपा अपनी मुश्किलों और हिंसा का सामना करती हैं, लेकिन अपने आत्मसम्मान और हौसले पर कभी समझौता नहीं करती। कार्तिक की मौजूदगी उनके जीवन में सहारा बनती है, लेकिन उनका रिश्ता केवल रोमांस तक सीमित नहीं है; यह संघर्ष, समझ और भावनाओं के अद्वितीय मेल का प्रतीक है। शो के निर्माता बताते हैं कि कहानी में केवल रोमांस नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और व्यक्तिगत मुद्दों, महिला सशक्तिकरण और रिश्तों की जटिलताओं को भी दर्शाती है। शो का प्रीमियर 4 दिसंबर को शाम 7:30 बजे स्टार प्लस पर होगा, और यह दर्शकों को हर एपिसोड में रोमांच और संवेदनाओं का गहरा अनुभव देगा। टीवी समीक्षक पहले ही प्रोमो की तारीफ कर चुके हैं और इसे इस सीजन की सबसे दमदार नई हिंदी टीवी लव स्टोरी के रूप में देख रहे हैं। दर्शक इस नए शो से काफी उम्मीदें लगा चुके हैं, खासकर अशिका पाडुकोण के हिंदी टीवी डेब्यू और उनके किरदार की ताकत के कारण।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail.com

04 मुंबई, शुक्रवार, 28 नवम्बर 2025 महाराष्ट्र
epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन में तनाव गहरा, बीजेपी विधायक का आरोप - शिंदे गुट के विधायक ने लिए 50 करोड़ रुपये

मुंबई। महाराष्ट्र की सत्ता में बने रहने वाले महायुति गठबंधन में एक बार फिर तनाव की लकीर खिंच गई है। बीजेपी विधायक तानाजी मुटकुले ने आरोप लगाया है कि उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट के विधायक संतोष बांगड़ ने 2022 में उद्धव ठाकरे गुट छोड़कर शिंदे खेमे में जाने के लिए 50 करोड़ रुपये लिए थे। यह आरोप न केवल राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बना हुआ है बल्कि महायुति गठबंधन के भीतर बढ़ते मतभेद और आंतरिक असंतोष को भी उजागर करता है।

तानाजी मुटकुले ने पीटीआई से बातचीत में कहा कि संतोष बांगड़ ने 2022 के राजनीतिक संकट के दौरान रातोंरात अपनी वफ़ादारी बदल दी और इसके लिए भारी राशि का लेनदेन किया। मुटकुले ने कहा कि बांगड़ पहले उद्धव ठाकरे के साथ बने रहने की अपील करते थे और लगातार यह जताते रहे कि वे ठाकरे खेमे का हिस्सा हैं, लेकिन अचानक उन्होंने अपने रुख में बदलाव कर शिंदे गुट का समर्थन करना शुरू कर दिया। मुटकुले ने यह भी स्पष्ट किया कि बांगड़ उनकी विचारधारा और राजनीतिक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाते और कभी भी उनके असली सहयोगी नहीं बन सकते।

महात्म्यपूर्ण है कि यह घटनाक्रम उस समय सामने आया है जब महाराष्ट्र में महायुति सरकार स्थानीय निकाय चुनावों की तैयारियों में व्यस्त है। जून 2022 में शिंदे ने लगभग 40 विधायकों के साथ बगावत की थी, जिसने तत्कालीन उद्धव ठाकरे सरकार को धराशायी कर दिया। उस दौरान "50 खोके, एकदम ओके" का नारा राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गया। अब महायुति के भीतर इसी पुराने घटनाक्रम और हाल के आरोपों ने गठबंधन में उथल-पुथल पैदा कर दी है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के आरोप महायुति के आंतरिक संतुलन को प्रभावित कर सकते हैं और आगामी स्थानीय निकाय चुनावों से पहले सहयोगी दलों के बीच तनाव बढ़ा सकते हैं। शिवसेना गुट और बीजेपी के बीच विवाद केवल व्यक्तिगत आरोपों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गठबंधन के निर्णय लेने की प्रक्रिया, कैबिनेट बैठकों में सहभागिता और नीति निर्धारण पर भी असर डाल रहा है। हाल ही में, शिवसेना के कई मंत्री स्थानीय निकाय चुनावों के समय कथित बीजेपी की तोड़फोड़ के विरोध में देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता वाली कैबिनेट बैठक से दूरी बनाते दिखे। इस पूरे घटनाक्रम ने महायुति गठबंधन के भीतर सहयोगियों के बीच बढ़ते संदेह, आरोप-प्रत्यारोप और राजनीतिक तनाव को उजागर कर दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले दिनों में राज्य की राजनीतिक स्थिरता और सरकार की कार्यवाही पर इन आरोपों का असर पड़ सकता है, खासकर तब जब 2026 के विधानसभा चुनाव की तैयारियाँ शुरू होंगी। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि इस विवाद का हल गठबंधन के नेतृत्व और पार्टी आलाकमान के समन्वय पर निर्भर करेगा, क्योंकि महायुति की सफलता अब केवल गठबंधन की नीतियों पर नहीं बल्कि दलों के बीच आपसी भरोसे और सहयोग पर भी टिकी है।

महापौर की दौड़ में कांग्रेस सबसे आगे, मुंबई में सर्वाधिक वार्ड जीतने का दावा : फरहान आजमी

मुंबई। कांग्रेस पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल द्वारा जारी बयान के अनुसार, मुंबई के तेजतर्रार और युवाओं में लोकप्रिय फरहान आजमी को मुंबई कांग्रेस कमेटी के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष रहे फरहान आजमी को यह अहम जिम्मेदारी आगामी मुंबई महानगरपालिका चुनाव को ध्यान में रखते हुए दी गई है।

मुस्लिम समाज में उनकी मजबूत पकड़ और लोकप्रियता को देखते हुए पार्टी को विश्वास है कि वे अल्पसंख्यक मतों को कांग्रेस के पक्ष में मजबूती से एकजुट करेंगे।

फरहान आजमी ने कहा कि वह स्वयं को कांग्रेस का सच्चा सिपाही और निष्ठावान कार्यकर्ता मानते हैं तथा पार्टी द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा, मेहनत और समर्पण के साथ निभाएंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ही वह पार्टी है जो राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सभी समाजों को साथ लेकर चलने की विचारधारा पर दृढ़तापूर्वक कायम है, इसलिए मुस्लिम समाज भी पूरी मजबूती से कांग्रेस के साथ खड़ा है।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आगामी मुंबई महानगरपालिका चुनाव में कांग्रेस सर्वाधिक वार्डों में विजयी होगी और अगला महापौर भी कांग्रेस का ही होगा।

मुंबई में 53वीं ई एवं एफ साउथ वार्ड विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य शुभारंभ, 55 स्कूलों ने दिखाए नवाचार

मुंबईः मझगांव स्थित सेंट मैरी हाई स्कूल (SSC) में गुरुवार को 53वीं ई एवं एफ साउथ वार्ड विज्ञान प्रदर्शनी 2025–26 का भव्य शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि शिक्षण निरीक्षक डॉ. वैशाली वीर ने ध्वज फहराकर किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान प्रदर्शनी बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रभावी माध्यम है और STEM शिक्षा आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ललिता दरेश्वर ने छात्रों को जिज्ञासा, प्रयोग और कल्पना को जीवन का हिस्सा बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि महान वैज्ञानिक वही बनते हैं जिन्हें सोचने और प्रयोग करने की स्वतंत्रता मिलती है।

इस वर्ष 55 से अधिक स्कूलों ने भाग लिया और छात्रों ने AI, रोबोटिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, डिजास्टर मैनेजमेंट और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर मॉडल प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों, संयोजकों और SSC टॉपर्स को सम्मानित किया गया।

उद्घाटन के बाद सभी मॉडलों का मूल्यांकन शुरू हुआ और दूसरे दिन सर्वश्रेष्ठ मॉडलों की घोषणा की जाएगी। शिक्षकों का कहना है कि इस प्रदर्शनी ने छात्रों में विज्ञान के प्रति उत्साह और जिज्ञासा को नया आयाम दिया है।

महाराष्ट्र की महायुति में फिर उबाल: बीजेपी विधायक का आरोप, शिंदे शिवसेना MLA ने लिए 50 करोड़ रुपये

मुंबई। महाराष्ट्र की सत्तारूढ़ महायुति सरकार में सहयोगी दलों के बीच जारी तनाव एक बार फिर उभरकर सामने आया है। बीजेपी विधायक तानाजी मुटकुले ने दावा किया है कि शिंदे गुट शिवसेना के विधायक संतोष बांगड़ ने 2022 में उद्धव ठाकरे गुट छोड़कर शिंदे खेमे में शामिल होने के लिए 50 करोड़ रुपये लिए थे। राज्य में बीजेपी, शिंदे गुट शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी मिलकर सरकार चला रहे हैं, लेकिन सहयोगी दलों के बीच अब भी पुरानी कटुता और सत्ता संघर्ष के संकेत दिखाई दे रहे हैं।

हिंगोली से मुटकुले ने पीटीआई को बताया कि संतोष बांगड़ ने 2022 के राजनीतिक संकट के दौरान पैसे लेकर अपना पक्ष बदल दिया। उन्होंने कहा कि बांगड़ पहले उद्धव ठाकरे के साथ बने रहने की अपील करते थे, लेकिन अचानक अपनी भूमिका बदलकर शिंदे गुट में शामिल हो गए। मुटकुले ने यह भी जोर देकर कहा कि बांगड़ उनकी विचारधारा से मेल नहीं खाते और कभी उनके साथी नहीं बन सकते।

महायुति गठबंधन में बढ़ता तनाव जून 2022 में एकनाथ शिंदे ने करीब 40 विधायकों के साथ बगावत की थी, जिसके बाद "50 खोके, एकदम ओके" का नारा राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बना। हाल ही में भी शिवसेना के कई मंत्रियों ने स्थानीय निकाय चुनावों से पहले बीजेपी द्वारा कथित तोड़फोड़ के विरोध में उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता वाली कैबिनेट बैठक से दूरी बना ली थी। इन घटनाओं ने महायुति गठबंधन के भीतर तनाव को और गहरा कर दिया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे आरोप महायुति के अंदरूनी समीकरणों में अस्थिरता को उजागर करते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, आगामी स्थानीय निकाय चुनावों और विधानसभा चुनावों से पहले इस तरह के विवाद गठबंधन के भीतर नई हलचल पैदा कर सकते हैं।

महाराष्ट्र की राजनीति में यह मुद्दा केवल व्यक्तिगत आरोपों तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे यह संकेत मिलता है कि महायुति में सहयोगियों के बीच विश्वास की कमी और सत्ता पर नियंत्रण की दौड़ लगातार जारी है।

मुंबई में नकली यूटीएस सीज़न टिकट रैकेट का भंडाफोड़, महिला यात्री और पति गिरफ्तार

मुंबई। मध्य रेल के एसी लोकल में एक यात्री को नकली यूटीएस जनरेटेड सीज़न टिकट के साथ पकड़ा गया, जिससे रेलवे सुरक्षा तंत्र की सतर्कता और प्रभावशीलता की मिसाल कायम हुई। यह घटना 26 नवंबर 2025 को कल्याण-दादर एसी लोकल में सुबह 10:02 बजे घटी, जब टिकट परीक्षक विशाल नवले ने निरीक्षण के दौरान महिला यात्री की दिखाई गई टिकट में संदेह महसूस किया।

सत्यापन के बाद पता चला कि टिकट नकली था और पहले समाप्त हो चुके टिकट को नए रूप में तैयार किया गया था। इस दौरान महिला यात्री की पहचान श्रीमती गुड़िया शर्मा के रूप में हुई। आगे की जांच में यह खुलासा हुआ कि नकली टिकट उनके पति श्री ओमकार शर्मा ने बनवाया था। दोनों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता अधिनियम 2023 की संबंधित धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज की गई है।

इस घटना ने रेलवे अधिकारियों और यात्रियों को दिखाया कि कर्मचारियों की सतर्कता किस तरह बड़े अपराधों को रोक सकती है। विशाल नवले की तीक्ष्ण दृष्टि और जिम्मेदाराना कर्तव्य पालन ने एक नकली टिकट रैकेट का पर्दाफाश किया, जिससे भविष्य में इसी तरह की धोखाधड़ी पर लगाम लगाने में मदद मिलेगी। मध्य रेल ने सभी यात्रियों से सावधानी बरतने का अनुरोध किया है।

महापरिनिर्वाण दिवस पर स्कूलों में अवकाश की मांग, मनसे ने उल्हासनगर मनपा को दिया निवेदन

उल्हासनगर। 6 दिसंबर को भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के मद्देनज़र महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के विधि विभाग के जिला अध्यक्ष एडवोकेट कल्पेश माने ने उल्हासनगर मनपा प्रशासन से शहर के सभी स्कूलों में अवकाश घोषित करने की मांग की है। एडवोकेट माने का कहना है कि बड़ी संख्या में नागरिक इस दिन बाबासाहेब को श्रद्धांजलि देने चैत्यभूमि जाते हैं, जिसके कारण कई अभिभावक बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते। इसलिए उन्होंने मनपा से 6 दिसंबर को शहर के सभी विद्यालयों में अवकाश रखने का आग्रह किया है।

IRCTC ने शुरू किया अभिनव MOSD टूर मॉडल, एक ही गंतव्य के लिए देशभर से यात्रियों को मिलेगा मौका

मुंबई। इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज़्म कॉरपोरेशन (IRCTC) ने यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए Multiple Origin, Single Destination (MOSD) मॉडल लॉन्च किया है। इस नई अवधारणा के तहत देश के विभिन्न शहरों से यात्रियों को जोड़कर 100 से 200 यात्रियों के समूह के रूप में एक ही अंतरराष्ट्रीय गंतव्य पर भेजा जाएगा।

MOSD मॉडल के तहत दुबई–अबू धाबी (22 जनवरी 2026, 4 रात/5 दिन, 91,500) और यूरोप ग्रैंड टूर (अप्रैल व जून 2026, 12 रात/13 दिन) जैसे मुख्य पैकेज पेश किए गए हैं। इसके अलावा जापान चेरी ब्लॉसम टूर (29 मार्च 2026, 3,49,700) और ऑस्ट्रेलिया टूर (5 मई 2026, 3,90,000) भी उपलब्ध हैं। IRCTC ने कई टूरों पर 5,000–6,000 तक का अर्ली बर्ड डिस्काउंट घोषित किया है, जो 17 दिसंबर 2025 तक वैध रहेगा, बशर्ते यात्री 30% अग्रिम भुगतान करें।

क्रिसमस और न्यू ईयर के लिए केरल, अंडमान, अयोध्या, वाराणसी, सौराष्ट्र सहित नेपाल और श्रीलंका के विशेष पैकेज भी जारी किए गए हैं। सभी पैकेजों में फ्लाइट, होटल, भोजन, साइटसीइंग, इंश्योरेंस और GST शामिल हैं।

IRCTC पश्चिम जोन के समूह महाप्रबंधक गौरव झा ने बताया कि ये पैकेज यात्रियों को त्योहारों के दौरान सुरक्षित, सुविधाजनक और यादगार यात्रा अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं।

सोमानी सेरेमिक्स ने अंधेरी ईस्ट, मुंबई में अपना सबसे बड़ा एक्सपीरियंस सेंटर लॉन्च किया

मुंबई। देश की अग्रणी सेरेमिक कंपनी सोमानी सेरेमिक्स ने अंधेरी ईस्ट में अपना सबसे बड़ा कंपनी-स्वामित्व वाला एक्सपीरियंस सेंटर शुरू किया है। करीब 7,000 वर्ग फुट में फैला यह सेंटर बड़े साइज स्लैब्स, फ्लोर टाइल्स, विट्रिफाइड टाइल्स, सेरेमिक टाइल्स, Elita–Senso जैसी नई रेंज, बाथवेयर के French और Signature कलेक्शन सहित कई नवीन उत्पादों का प्रदर्शन करता है।

उद्घाटन कंपनी के सीईओ (टाइल्स) अमित सहाय ने किया। उन्होंने कहा कि मुंबई हमेशा से कंपनी का प्रमुख बाजार रहा है और यह नया सेंटर आधुनिक डिज़ाइन और मल्टी-कैटेगरी डिस्प्ले के साथ ग्राहकों, आर्किटेक्ट्स और प्रोफेशनल्स के लिए एक प्रेरणादायक डिज़ाइन हब साबित होगा।

उल्हासनगर में पाँच दिवसीय वैदिक होमात महायज्ञ, संतों के सानिध्य से गूँजा दशहरा मैदान

उल्हासनगर। स्वामी ओंकारानंद आश्रम ट्रस्ट द्वारा कैंप 5 के दहासरा मैदान में 26 से 30 नवंबर तक पाँच दिवसीय वैदिक होमात महायज्ञ आयोजित किया जा रहा है। देशभर से आए 200 से अधिक संत-महात्माओं की उपस्थिति से पूरा क्षेत्र आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर है।

रुद्राभिषेक, स्वाहाकार अनुष्ठान और सायंकालीन प्रवचनों से भक्तों में आस्था और उत्साह की लहर है। ट्रस्ट के पदाधिकारियों और समिति के सदस्यों के सहयोग से यह महोत्सव अनुशासित व भक्तिमय वातावरण में जारी है।

30 नवंबर को वेद भगवान शोभायात्रा, महापूर्णाहुति और विशेष प्रवचन के साथ महायज्ञ का समापन होगा। प्रतिदिन ब्रह्म भोजन और महाप्रसाद की व्यवस्था की गई है।

किआ इंडिया ने 'ड्राइव ग्रीन' पहल लॉन्च की, ईवी उपयोगकर्ताओं में बढ़ेगी पर्यावरण जागरूकता

मुंबई। किआ इंडिया ने पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने और इलेक्ट्रिक वाहन उपयोगकर्ताओं में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 'किआ ड्राइव ग्रीन' पहल की शुरुआत की है। यह पहल किआ कनेक्ट ऐप पर उपलब्ध एक स्थिरता-केंद्रित डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो यूज़र्स को पर्यावरण के अनुकूल ड्राइविंग आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगा। कंपनी का कहना है कि यह प्रयास ग्रीन मोबिलिटी को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

नया फीचर फिलहाल किआ कैरेंस क्लैविस ईवी पर उपलब्ध है और इसे किआ कनेक्ट ऐप के 'न्यू सर्विसेज' टैब से एक्सेस किया जा सकता है। कंपनी इसे धीरे-धीरे अपने सभी आगामी इलेक्ट्रिक वाहनों में लागू करेगी। इस फीचर के तहत हर महीने ऐप में एक वर्चुअल पेड़ लगाया जाएगा, जो उपभोक्ता द्वारा तय की गई दूरी के अनुसार पाँच चरणों में बढ़ता जाएगा। साथ ही, पर्यावरण-अनुकूल ड्राइविंग के लिए ऐप यूज़र्स को ग्रीन एक्सप्लोरर से लेकर प्लैनेट प्रोटेक्टर तक पाँच इको-बैज प्रदान किए जाएंगे।

ऐप कार्बन डाइऑक्साइड बचत को भी दर्शाता है—जैसे 100 किलोमीटर की ड्राइव से लगभग 13.2 किलोग्राम CO की बचत होती है, जबकि 1,500 किलोमीटर चलने पर करीब 197.6 किलोग्राम CO की बचत दर्ज होती है।

किआ इंडिया के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (सेल्स एवं मार्केटिंग) अतुल सूद के अनुसार, मोबिलिटी के प्रति कंपनी की सोच पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी से गहराई से जुड़ी है। उन्होंने कहा कि 'किआ ड्राइव ग्रीन' न केवल ग्राहकों के अनुभव को बेहतर बनाती है, बल्कि कंपनी की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता—स्वच्छ और सतत मोबिलिटी—को भी मजबूत करती है।

किआ की यह पहल कंपनी के व्यापक ग्रीन मोबिलिटी विज़न का हिस्सा है, जो वाहनों से आगे बढ़कर डिजिटल अनुभवों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति ईमानदार और जागरूक व्यवहार को प्रोत्साहित करती है।